ड॰ भूपेन हाजरिका के गीतों में सामाजिक चित्रण : एक अध्ययन

श्री मनीषा बरदलै
गवेषिका, असमीया विभाग
गोहाटी विश्वविद्यालय

संक्षिप्तसार

संगीतसुर्य डॉ भूपेन हाजरिका जी भारत तथा विश्व के संगीत जगत में एक उज्ज्वल नक्षत्र हैं। शवी शताव्दि के शुरुवात के दशक में समग्र असम, भारत, तथा विश्व वासियों के लिए कोई एक व्यक्ति विशेष नाम मात्र न रहकर साहित्य कला, तथा संस्कृति के क्षेत्र एक साथ कंठ, सुर, चित्र, कविता और गद्यों से सजाया हुआ एक विचित्र अनुष्ठान स्वरुप है भुपेन हाजरिका। हाजरिका जी के अनेको साहित्य सृष्टि समुह में लक्ष्मीनाथ वेजबरुवा, विष्णु प्रसाद राभा, च्योति प्रसाद आगरवाला आदि स्वनाम धन्य महानायकों के सान्निध्य में आकर उन्होंने अपने गीतों में प्रधान विषय के रूप में समाज और मानवों को लिए थे। समाज में व्याप्त कुसंस्कृतियों को दुर करने हेतु विद्रोह के गीत भी गाएँ हैं। असुरक्षित महसुस करने वाले सैकड़ो आम जनता के कण्ठ बनकर अपने गीतों के जरिए प्रगतिवादी कण्ठ को प्रवाहित किए हैं। समाज के विविध समस्याओं को उन्होंने अपने गीतों में मुख्य विषय के रुपमें जगह दी है।

सुचक शब्द - भुपेन हाजरिका, गीत, सामाजिक, गीतिकार।

1.00 अवतरणिका :

अपने गीतों की विषयवस्तु के बारे में हाजरिका जी कहते हैं -

मैंने जीवन के विभिन्न क्षणों में कइयों गीतों की रचना की है। कभी खुद और कभी दुसरों ने भी गाए हैं। मैंने सिर्फ गीतों की संख्या बढ़ाने के लिए नहीं लिखे हैं। जब कभी मेरे हृदय में किसी विषय को लेकर स्पन्दन सृष्टि होती है तब मैं गीतों के रूपमें उसे प्रकट करने की कोशिश करते आया हूँ। आम जनता के बारे में ही मेरे गीतों की भाषा की रूपमें प्रकट करता हूँ न कि कल्पना जगत को लेकर।

भूपेन हाजरिका जी एक संस्कारकामी भावापन्न व्यक्ति थे। उन्होंने बचपन से ही ऐसी एक समाज की कल्पना की थी जहाँ शोषणकारी और अमीर-गरीब का भेदभाव नहीं, जीसमें प्रेम और करूणा हो, जिस समाज में नैतिकता हो, जात-पात की भेदाभेद भाव जैसे निम्न विचारों का स्थान आम लोगों के दिल में पनप न पाए। सुनने में अप्रिय हो तो भी सच यह है कि आज भी असमीया समाज में जात-पात यानी ऊँच-नीच की भेदभाव बरकरार है। जात-

पात को लेकर ऊँच-नीच का भेदभाव का शिकार हाजरिका जी भी हुए हैं। समाज में नीचले वर्ग विवचित कैवर्तकुल के होने के कारण अपनी प्रेमी को भी खोना पड़ा था। मन पसन्द साथि न मिलने के कारण हाजरिका जी निःसन्देह मर्महत हुए थे इसीलिए असमीया समाज से जातिगत वैषम्य को दुर करने के लिए उनकी हृदय की व्याकुल व्यथा को सचेतन रुप से कलम के जरिए उजागर किये है। समाज संस्कार हेतु रचित एक गीत में इस प्रकार लिखे है -

"सरुदै आइदेउर कि ह'ल
कि ह'ल
सरुकणत बहिबर मन ग'ल
लेठा ह'ल
समाजेउ अनुमति निदिले
दुयोरे जात-पात निमिले
'सेये' सरुदै सरुकणे बिजुली पोहरत
सरु सरु समाजक एरे।"

(जात-पात, उच्च-नीच परम्परा असमीया समाज में भी है। जिसके फलस्वरुप समाज के सरुदै नामक एक लड़की की शादी सरुकन नामक एक लड़के के साथ होना असम्भव हो उठता है। क्योंकि दोनों में जात-पात की मेल नहीं है।)

2.00 पद्धति :

इस गवेषणा पत्रिका को प्रस्तुत करने के लिए हमें विश्लेषणात्मक पध्यति का प्रयोग किया है।

3.00 मुख्य आलोचना :

सामाजिक चेतनाओं के गीतिकार के रुप में आपने गीतों के जरिए समाज में प्रचलित मानवताहीन कर्म काण्डों को धिक्कारते जात-पात तथा वर्ण वैषम्य के विरूद्ध प्रवलरुप से प्रतिवाद किए हैं। प्रगतिशील मानसिकता के प्रतिनिधि साधारण सा प्रतीत होने वाले लोग साधारणतः समाजिकी रीति-नीतियों का अवहेलन करने का साहस जुटा नहीं पाते। भूपेन हाजरिका जी के गीतों में दुसके विपरीत दृश्य ही देखा जाता है। 'युवती अनामिका', 'डुग-डुग डम्वरु', 'मदारर फुल', 'नेलागे समाज नेलागे', 'भन्टि ओ भन्टि', 'गुपुते गुपुते' आदि बहुत सारे गीतों में हाजरिका जी ने असमीया समाज के बीच प्रचलित जातिभेद के रुपों को दर्शए हैं। सन 1964 में रचित 'मदारर फुल' शीर्षक के जरिए हाजरिका जी ने खुद अपने जीवन के वास्तव कहानी को ही दशाए हैं कैवर्त सम्प्रदाय के युवक होने के कारण उनकी गुणाबली की अवज्ञा की थी। मानवों को मानव के रुपमें न लेकर जात-पात के नाम पर मानवों को बाँटने वाले कुछेक परश्रीकातर, इर्ष्यापरायक व्यक्तियों के दृष्टि में भूपेन हाजरिका 'मदाररफूल' बने। जरुर इन लोगों को उन्होंने बातों से नहीं गीतों से समूचित जवाब इस प्रकार दिए है -

"मदाररे फूल हेनो पूजातो नेलागे
मदाररे फूल हेनो सबाहत नेलागे।"

(मदार के फूल पुजा में (लगाना) चढ़ाना मना है। शुभ कर्म में यह फूल व्यवहार नहीं किया जाता। लाल सुन्दर इस फूल को समाज के इर्ष्यापरायण लोगों के साथ तुलना किए हैं।)

शवी शताव्दी की ओर तेजी से आगे बढ़ते हुए सभ्य मानवों को जात-पात की संकीर्णता से ऊपर उठकर इस व्याधि का नामो निशान समाज से मिटाने के लिए आगे बढ़ने का आह्वान हाजरिका जी में 'युवती अनामिका' शीर्षक गीत में एसे व्यक्त करते हैं कि -

(विशं शतिका में जात-पात की विचार समाज से मिटानो के लिए हाजरिका जी इस गीतों की रचना की है)

"ऊनविशं शतिकार ध्यान-धारणा
विशं शतिकात शोभा नेपाय
एकविशं शतिका आहिबलै
तिनि दशको जे नाइ।
हे अनामिका आरु प्रशान्त दास
दुयो पाबा नव नव ज्योतिर आभास
आशिसे भरा हओक दुयोरे आकाश"

प्रेम में आकुल हाजरिका जी प्रेयसी द्वारा प्रताड़ित होते हुए भी अटीरिक्सा चलाओ आमि दूयो भाई (1968) गीत में भाई की प्रेयसी ने श्रम को मर्यादित करते हुए एक अटीरिक्सा चालक उनके भाई के साथ व्याह के सम्मत होते देख आनन्दित होते हुए तत्कालिन शिक्षित बेकार जनों को मन का मयला हटाने के कर्मप्रेरणा देने के उद्देश्य से गीत गाते है -

"भाल करिलि भाइ भालेइ करिलि
भाबी भाइबोवारीलै आशिस अपार।
हाकिम मन्तीर चाकरि बिचारि तइ
नह'लि जे भाग्ये चिरबेकार।"

(होनेवाली भाई वधु को आशीष देते हुवे वे कहते हैं कि भाई को वह निकम्मा नहीं बनाती है।)

सन 1968 में रचित गीतों से तत्कालिन बेकारी समस्याओं के साथ श्रोताओं को परिचित करानें का काम किये हैं। 'Dignity of labour' को समझनेवाली कुछ एक प्रेयसिचों के अलवा मोटे मोटे अंक के रुपयों की पूजने वाली नारियों की संख्या ही आज की समाज में ज्यादातर दिखाई देती है। समाज सचेतक गीतकार ने कथोपकथन पद्धति के जरिए बेकारी समस्याओं से निजात पाने का उपाय मानो इस प्रकार दिए हैं-

"अर्थनीति दुयोरे छाबजेक्ट
एइबार पेयसी फिफ्थ इयार
जोबा बेलि मइ एम, ए पाछ करि
लैछिलो पार्मिट अटोरिक्सार।"

(अर्थनीति प्रेमिक- प्रेमिका दोनों की पाठ्य विषय है। प्रेमिका इस वर्ष पंचम वर्ष की है। गात वर्ष में एम.ए उत्तीर्ण हो कर अटोरिक्सार की पार्मित पाया था।)

कर्म के क्षेत्र में कोई बड़ा-कोई छोटा नहीं होता है। विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा हासिल करने के बाद भी जब नौकरी के लिए विभिन्न दिक्कतों का सामना करने हुए नौकरी न मिलने पर ऐसे बैठे रहने से तो खुद को कर्म के जरिए निरंतर आमे बढ़ाते रहने के लिए उनके गीतों से युवाओं के प्रेरणा मिलती है। इसीलिए उन्होंने गाए हैं -

"कर्म्मइ आमार धर्म, कर्म्मइ आमार धर्म
आमि जीवन-युँजत जिकिब लागिब
पिन्धि साहसर बर्म्म।"

(कर्म हमारा धर्म है, कर्म हमारा धर्म है। साहस के वर्म परिधान कर हम जीवन युद्ध में विजय होंगे।)

भुपेन हाजरिका जी कर्ममय जीवन में स्पष्ट रुप से प्रतिभात होती है कि हर जाति, धर्म, वर्ण सभी वगों के जनों के प्रति उनके हृदय में अपरिसीम (सीमा हीन) प्यार और मुहब्बत था। स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि दर्शन में जिस प्रकार की मानवतावादि प्रतिष्ठा की कोशिश परिलक्षित होती, ठीक उसी तरह हाजरिका जी के गीतों में साम्प्रदायिक सौहार्द्य, प्रेम-करुणा, अहिंसा आदि प्रतिष्ठा करने की अविरत प्रयास इस प्रकार देखा जाता है-

"महात्माइ हासि बोले राम-रहिम
बान्ध राम रहिम
एकेलगे एके संगे बान्धव पातिम
हाय हाय राम रहिम।"

(महात्मा गांधी हँसते हुवे कहते हैं कि हिन्दु मुसलमान मिल कर एक साथ राम-रहीम के नाम-कीर्तन करेंगे।)

ऐकयता ही जन-गण की मूल शक्ति है। समाज में किसी भी समस्या समाधान हेतु एकत्रित होकर आगे बढे तो निश्चय ही बड़ी आसानी से समाधान कर पायेंगे। इसीलिए हाजरिका जी ने शोषणकारियों के विरुद्ध आम जनता को एकत्रित कर साक्षर मत्रं देते है -

"हरिजन, पाहारी, हिन्दु -मुछलिमर
बड़ो, कोच, चुतीया, कछारी, आहोमर

अन्तर भेदि मौ बोवाम,भेदाभेदर प्राचीर भाङि
साम्यर सरग रचिम।"

(हरिजन, पहाड़ी, हिन्दु-मुसलमान, बोड़ो, कोच, चुतीया, कछारी आहोमों के हृदय से (मधु) अमृत प्रवाह करके विभेदता के दीवार भंग करेंगे और साम्मवाद के सर्म रचना करेंगे।)

महापुरूष शंकरदेव ने असम के विभिन्न जनगोष्ठियों के धर्म के बंधन में बाँध कर जो आदर्श स्थापित किया था उसे देखकर छोटे अवस्था में ही उसके प्रति हाजरिका जी आकृष्ट हुए थे। शायद इसीलिए उन्होंने अपने जीवन की प्रथम रचित गीत ही था 'कुसुम्बर पुत्र श्री मंत शंकर गुरूवे धरिछिल नामेरे तान।'

विश्वख्यात इन कलाकार ने असम के छोटे-बड़े विभिन्न आदिम जनगोष्ठियों की भाषा, कृष्टि - संस्कृति का उल्लेख करते हुए बहुत सारे गीत रचना करके गये हैं। जरुर कुछ कुछ गीतो में कोई कुछ जनगोंष्ठियों का सिर्फ नाम मात्र उल्लेख कर के ही छोड़े नहीं हैं, गीतों के जरिए उन जनगोष्ठियों की भाषा, समाज, साहित्य, कारिगरी संस्कृतियों का सुन्दर रूप से वर्णन किये हैं। उदाहरण के तौर पर - 'बोलो अ', मिचिङ डेकाटि' गीत में मिचिङ समाज की वेश - भुषा मिबुवालुक (उत्सवों में पहने जाने वाला कपड़ा), पेरेरूमवाङ चादर, शिर में बाँधनेवाला दुमुरेदि गमछा, एगे मेखेला, रिबि गाचेङ, वाद्य यंत्र, पेंपा, गुङगाङ (गगना) लोकगीत में ऐनितम का उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त 'शंकर माधवर महा महा सृष्टिरे' गीत में असम के नवीन प्रवीण असमीयों की समन्वय से असम और असमीया भाषा पुष्ट हो सकेगी उसे हाजरिका जी ने सुन्दर ढंग से समझाए हैं। जनजातिय भाषा के जरिए ख्याति प्राप्त और सच्चे असमीया भावों से पुष्ट महान व्यक्ति तरुण पामेगाम, विष्णु राभा के आदर्श और रचना (कृति) के बारे में इस तरह उल्लेख करते है -

"बड़ो, राभा, मिचिङर रुपे रसे भरपुर
जीया जीया आमार भाषार
लिखाबोर किय बारु पढ़ि पढ़ि
चोवा नाइ पामेगाम विष्णुराभार।"

(हमारी असमीया मातृभाषा बोड़ो, राभा और मिचिङ के रुप रस से भरपुर है। पामेगाम (तरुण) विष्णु प्रसाद राभा के लेखनी में वह रूप-रस मिलता है।)

भूपेन हाजरिका जी के गीतों का मुख्य संपद है आम जनता। आपके गीतों में भिन्न वर्गों के संग्राम, प्रेम-प्रणय, जात्याभिमान एवं सभी सामाजिक नीतियों को सोड़कर मानवता को अपनाने की प्रयास की गयी है। इनके गीतों की दायरा समस्त विश्व स्तरीय का है। विश्व के सभी प्रान्तों में भ्रमण करने के कारण, आप देखें हैं कि सिर्फ असम ही नहीं बल्कि दुनिया के सभी देशों में शक्तिहीनों (कमजोड़ों) के उँपर शक्तिमानों का शोषन चलता है। फलस्वरूप मानव

समाज में दों श्रेणी की सृष्टि होती है। एक शोषक और दुसरा है शोषित। कार्लमार्क्स ने इस सत्यता को स्वीकार करते हुऐ इस प्रकार व्यक्त किए है –

"By organising and directing the struggle of working class againts the Capitalist and their associates and by interlinking with their struggle in certain quite possible ways the struggle of the poor peasents and tenant farmers against the land lords ..... and change the system."

इसके द्वारा हाजरिका जी प्रभावित हुए हैं। आपके गीतों में शोषितों के मर्मवेदना व्यक्त हुए हैं।

हाजरिका जी परिश्रमी लोगों के मित्र थे। परिश्रमीओं के कठोर परिश्रम की चित्र देखकर वे उनलोगों की दुखो की समभागी होकर उनलोगों के वास्तविक रूप को अंकन किए हैं। सन 1953 में सृष्टि 'हे दोला' शीर्षक गीत में बड़े लोगों पाल्कि ले जानेवाले लोगों के दुख - दर्द, दारिद्रता को उपलब्ध करके गीतिकार इस प्रकार वर्णन किए हैं।

"आपोन करिलो वनुवार जीवनक
देहा भागराई तोला, हे तोला।।
मोरहे लराटिक एइबार बिहुते
निदिलों सुतारे चोला।
चकुलो उलालेउ मनटि नेभाङो
कढ़ियाइ लै याउँ दोला।"

(श्रमिक जीवन को अपना लिया, शरीर थक गया इस बिहु में मैंने अपने बेटे को सुती कुर्ता दे नहीं पायी। आँसु गिर गयी, तो भी में अपने मन की दृढ़ता नहीं छोड़ोंगा।)

हाजरिका जिस समाज में जन्म हुए हैं वह समाज भिन्न परिस्थितियों में भिन्न गीत गाकर वे कभी कभी क्रान्तिकारी रुप लेकर समाज को सुधार करना चाहते हैं, कभी - कभी शोषनकारी को चेतावनी देते हैं और कभी आम जनताओं के दुखों का समभागी होते हैं। इस दिशा में आपके दृष्टिकोण सिर्फ असम में ही नहीं बल्कि समग्र भारत से विश्वव्यापी करने की प्रयास करते हैं और फलतः आपके कंठो से निर्जर होते हैं–

'मानुहे मानुहर बाबे यदिहे अकने नाभाबे', 'शीतरे सेमेका राति', 'वस्तबिहीन कोनो खेतियकर', 'भागि परा पजाटिर तुँह जुइ एकुरा', 'तुमि नतुन पूरुष', 'तुमि नतुन नारी', 'अनागत दिनर जाग्रत प्रहरी', 'अ' मोर धरित्री आइ', 'पाहार भौयामर संगम स्थलीते', 'आतंकवाद हुचियार', 'ढाक् ढाक् ढाक् ढाकेइ बजालि', 'जीवन सिन्धु बहु बिन्दुरे हय यदि कर्मरे हय बिन्दु पूर्ण', इत्यादि अनेक मानवतावादी गीत हैं।

असम से जिस प्रकार हर साल त्योहार होते हैं ठीक उसी प्रकार व्यगांत्मक दृष्टि से बाढ़ आती है। बाढ़ से प्रभावित होकर आम लोगों को काफी परेशानी होती है। जन जीवन कभी कभी अस्तव्यस्त हो जाती है। किसानों की खेती नष्ट हो जाती, धन - जन की हानि होती है। असमीया लोगों के सुख - दुख और अनुभूति प्रति हाजरिका सदा सचेतन थे। गीतों के द्वारा आपने बाढ़ की सुख - दुख इस प्रकार व्यक्त करते हैं –

"काल बानपानी एटि आहि
महाशवदे मषिमुर करिले
सरुकै खेररे पँजाटि
धाननिउ तल गल
चेनेहीउ उटि गल
डुगडुगी बन्धकत आछे।"

"लुइतर बलिया बान
तइ कलैनो ढापलि मेलिछ ?
हिर हिर शबदे
कालरूप धरि लै
काकनो बारे बारे खेदिछ।"

(बाढ़ आकर कुटी को विनाश किया। खेत भी विनष्ट हुई, पत्नी भी मरी, गले की अलंकार भी खोनी पड़ी।)

स्वाधीनता के बाद असम में कई आन्दोलन होते थे। एक समाज सचेतन व्यक्ति के रूप में आपने उसमे भाग लेते थे। यह आपके जीवन के एक उल्लेखनीय भूमिका थे। असम के हर जातीय संकट जैसे - भाषा आन्दोलन, माध्यम आन्दोलन, विदेशी बहिस्कार आन्दोलन आदि में वे असम के लिए आवाज उठाकर अपनी जाति प्रेम और सामाजिक दायित्य का परिचय देते थे। विदेशी बहिष्कार आन्दोलन के दौरान नेली मैं हुई अमानवीय कार्य के प्रति आपके हृदय विदीर्ण हो जाते थे।

"शीतरे सेमेका राति
संख्यालधु कोनो सम्प्रादायर
भयार्त्र मनटिर
नुफुटा आर्तनाद
निजेइ प्रकाश करि
मिठा येन एटि निरापत्ता हऊँ
निरापत्ता हऊँ निरापत्ता हऊँ।"

(संख्यालघु सम्प्रदाय के लोगों के जीवन मुसीबतों में पर कर किश प्रकार भय और आर्तनाद के जीवन बीताते थे, उसका जीता जागता चित्रण इस प्रकार आप व्यक्त करते है।)

असम आन्दोलन के पृष्ठभूमि पर सन 1968 में 'आमि असमीया नहऊँ दुखीया' गीत के जरिए असम के भविष्यत का रूप अवलोकन कर वे समाज के सचेतन व्यक्ति के रूप में अपने को परिचय दिये हैं। बारह - रहनीया कृष्टि के अधिकारी होकर असमीया लोग अपने को नहीं

पहचानेंगे, अपने अपने बीच में लड़ाई - झगड़ा करेंगे, तब अपनी जाति की विनाश अनिवार्य है। इसीलिए वे गाते है –

"आमि असमीया नहउँ दुखीया
बुलि सान्तना लभिले नहँब
आजिर असमीयाई
निजक निसिनिले
असम रसातले याब।।
.....
मोर आइक भाल पाउँ बुलिले
आनर आइक जानो घिन करा बुजाब"?

(हम असमिया गरीब नहीं है, इस प्रकार अपने को सान्तना लेना नहीं चाहिए। आज के असमीया अपने को अगर न पहचानेंगो तो असम रसातक जायोंगे। भिन्न जाति उपजाति के रंगीन कृष्टि को अपनाकर असम भूमि की सृष्टि हुई है। विभेद को भूलकर परिश्रम करके अगर हम असम को निर्माण न करेंगे तब यह असम विनाश होंगे और लोगों के मन भी टुट जायेंगे। अगर आज के असमिया लोग असम को रक्षा न करेंगे तब असम में असमीया लोग भिक्षारी बन
जायोंगे।)

इसके अलावा सन 1972 में 'मृत्युकथा', 'मुक्ति कथा' और 'शेष कथा' नामक शीर्षक गीतों में ऐतिहासिक भाषा आन्दोलन के विभत्स नरसंहार का जीता जागता चित्रण देखने को मिलते हौं। समाज सचेतन गीतिकार हाजरिका के 'मृत्युकथा' शीर्षक गीत में इस प्रकार आपका मनोभाव प्रकट होते हैं।

"सातोटि तेजर धारा चिनिछों चिनिछों येन
ज्वले तात मुख कारोबार -
एटि येन रंजित, आनटि सुर्य आरु
गोलाप कलिटिर दरे सुकोमल
मोजाम्मिल 'धन'र देहार
तेज सानि कोरानत तहँते जिञर किय ?
कि नाम सेइटो भाषार"

(सात रक्त प्रवाह को पहचानने जैसे लगा है। वहाँ रंजित सूर्य, अनिल बरा, मोजामिल हक आदि भाषा आन्दोलनकारी का चेहरा देखने को मिलता है। कोरान में रक्त लगाकर चिल्लाते क्यों ? वह भाषा का नाम क्या है।)

हाजरिका जी गणशिल्पी, समाज के लोग, और इसीलिए आपके प्रायः गीतों के द्वारा जनजीवन के सुन्दर चित्र का अवलोकन देखने को मिलता है। इस संदर्भ में हम कह सकते हैं कि

सन 1993 में प्रकाशित 'प्रियजन' (कथाछबि) सिनेमा के 'आहुधान दाबलै' शीर्षक गीत में। इस गीत में हैं आहु, बाउधान संग्रह के साथ साथ मछली पकड़बा, जललाना डिंगा सफर, तैरना कला, माकरि घिला खेल की बात, उघा चलाने की बात, नया भोजन आदि का सुन्दर चित्रण के अलावा बिहुनाम और बियानाम के सुन्दर सुरों का समाहार है। उदाहरण के लिए –

"आमालै नेचाय, आकाश चाइ चाइ
चिलनी सातोरहे दिया।
माकरि ऐ घिलाटि, घुराब सोन नेजान
बागरि बागरि परे।
अ' कँकाल सरु सरु गाभरू आनिमें
उघानो घुरादि घुरे.....।
राजहुवा न-खोवा, ऐ राम
गाँवे गाँवे पातिसे, ऐ राम.....।"

बचपन में आपको लक्ष्मीनाथ बेजबरूवा, ज्योतिप्रसाद, विष्णुराभा आदि महान व्यक्तियों के संपर्क में आते थे। फलतः वे असमिया संस्कृति एतिह्य और परंपरा के प्रति सचेतन थे और असम के समाज जीवन के एक मनोरम चित्र आपके गीतों के जरिए व्यक्त करते थे। इसीलिए हाजरिका के गीतों में ब'हाग, गमछा, चिफुं आदि का व्यवहार अधिक है। नगेन शइकीया जी ने इसीलिए आपके गीतों के बारे में इस प्रकार कहते थे — "तेउँर गीतर विषयवस्तु, तेउँर गीतर कथा आरु तेउँर गीतत व्यवहृत मानुहर अनुभुतिर लगत जड़ित सुर एइ सकलोबोर तेउँर गीतक एटि सुकीया मर्यादा दिछे।"

4.00 परिसमाप्ति :

अतः हाजरिका के गीतों में एक विशेष प्रशंसनीय दिशा यह है कि आपके गीतों में सामाजिय समस्या के उल्लेख जिस प्रकार है - ठीक उसी प्रकार उसका हल करने का उपाय भी दिये हैं। आपके गीतों में समाज के सभी वर्ग के लोगों की सभी समस्याए और उनके कारण आर्तनाद भी सुनने को मिलते हैं। आपके गीत अमर हैं। आपके गीत लोगों के जड़ता को दूर कर सकते हैं। उनके गीतों में प्राणशक्ति है। उनके गीतों की कथा और सूरों की झनझनाहट में सामाजिक अन्याय - अविचार कें खिलाफ एक तीव्र बिरोध का झंकार है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची -

1. गोस्वामी, लोकनाथ : निन्दिता भूपेन दा, वन्दिता भूरेन दा, आँक-वाँक, 2009
2. दत्त, दिलीप कुमार : भूपेन हाजरिकार गीत आरु जीवन रथ, वनलता, 2011
3. दत्त, नम्रता : भूपेनदा, ज्योति प्रकाशन, 2011
4. पूजारी, अर्चना : डॉ भूपेन हाजरिकार मुल्यायन, वाणी मंदिर, 2002
5. बेजबरूवा, लक्षीनाथ : बेजबरूवा ग्रन्थावली, साहित्य प्रकाश, 1988
6. हाजरिका, सूर्य : डॉ. भूपेन हाजरिकार गीत समग्र, एछ. एइच. शैक्षिक न्यास, 2010
7. हाजरिका, सुर्य आरु नाथ, रतिमोहन : डॉ. भुपेन हाजरिकार रचनावली (सम्पा.), प्रथम आरु द्वितीय खंड, 2008

पत्र-पत्रिकाएँ -

1. बरगोहाँइ, होमेन (सम्पा.) : आमार असम, 6 नबेम्बर, 2011
2. ..... : आमार असम, 15 नबेम्बर, 2011
3. लस्कर, शंकर (सम्पा.) : नियमीया वार्ता, 8 नबेम्बर, 2011
4. ..... : नियमीया वार्ता, 15 नबेम्बर, 2011